हिन्दी उपन्यास

एक विमर्श

• डॉ. रीता

डॉ. रीता

4 मई, 1974 दिल्ली के चन्द्रावल गाँव के एक साधारण किसान परिवार में जन्म। दिल्ली विश्वविद्यालय से बी.ए., एम.ए. , एम. फिल. एवं पीएच. डी. की उपाधि प्राप्त। 'उदय प्रकाश की कहानियों में समाज' पुस्तक का लेखन। विभिन्न शोध-पत्रिकाओं में 5 शोध पत्र प्रकाशित।

विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों (इंटरनेशनल सेमिनार) में शोध-पत्र प्रस्तुति राष्ट्रीय, अन्तरराष्ट्रीय संगोष्ठियों में भाग।

लगभग 6 वर्षों से दिल्ली विश्वविद्यालय के मैत्रेयी महाविद्यालय में सहायक प्रवक्ता के रूप में अध्यापन।

कथा साहित्य, दलित एवं स्त्री विमर्श में विशेष रूचि।

श्री नटराज प्रकाशन
ए-507/12, करतार नगर, बाबा श्यामगिरी मार्ग
साउथ गामड़ी एक्सटेंशन, दिल्ली 110053
फोन : 011 -22941694, मो. 9312754789
E-mail : shreenatrajprakashan@gmail.com
ISBN 978-93-86113-66-5

हिन्दी उपन्यास : एक विमर्श

डॉ. रीता

श्री नटराज प्रकाशन
दिल्ली-110053

प्रकाशक
श्री नटराज प्रकाशन
ए-507/12, साउथ गांवड़ी एक्स.
दिल्ली-110053
फोन : 011-22941694
Email : shreenatrajprakashan@gmail.com

ISBN : 978-93-86113-66-5

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2017

मूल्य : 695.00 रुपये

शब्द संयोजन : श्री नटराज प्रकाशन, दिल्ली-110053

मुद्रक : डिजीटल प्रिंटर्स, दिल्ली-110053

भारत में मुद्रितः HINDI UPNIYAS : EK VIMARSH by *Dr. Reeta*

श्री नटराज प्रकाशन, ए-507/12, साउथ गांवड़ी एक्स. दिल्ली-110053 से टी.एस. राघव द्वारा प्रकाशित, प्रिंस कम्प्यूटर्स द्वारा पृष्ठ सज्जा क्वालिटी प्रिंटर्स द्वारा आवरण सज्जा तथा पूजा ऑफसेट प्रेस, मौजपुर, दिल्ली-110053 द्वारा मुद्रित।

भूमिका

उपन्यास आज गद्य की सबसे लोकप्रिय और सशक्त विधा है। जीवन की सम्पूर्ण और वास्तविक उपस्थिति ही उपन्यास का मुख्य आकर्षण है। उपन्यास को समग्र युग चेतना का दर्पण माना जाता है, जिसमें व्यक्ति और समाज का बाह्य और आभ्यांतर प्रतिबिम्बित होता है। रेल्फ फॉक्स उपन्यासकार को नये समाज का महाकवि कहते हैं। इस कथन के आलोक में उपन्यास को नवयुग का महाकाव्य कहा जा सकता है।

उपन्यासों की जिज्ञासु पाठिका होने के नाते शोधकार्य करने की दृष्टि से उपन्यास की ओर मेरा ध्यान आकृष्ट हुआ। 1975-2000 तक का काल विभिन्न बदलावों का समय रहा है। 1975 में देश में आपात्काल की घोषणा की गई। इस घटना ने देश को दूर तक प्रभावित किया। विशेषकर भारतीय राजनीति को। आठवें दशक में अस्मितामूलक विमर्श चर्चा के केन्द्र में आए। स्त्री-विमर्श, दलित-विमर्श अस्मितामूलक विमर्श हैं जो सत्ता में अपने हिस्से की दावेदारी प्रस्तुत करते हैं। इस अवधि में स्त्री चेतना तथा दलित-चेतना ने आंदोलन का रूप धारण कर लिया। नब्बे के दशक में उदारीकरण, निजीकरण के फलस्वरूप भूमंडलीकरण की प्रक्रिया देश में तेज हुई।

इस प्रकार 1975 के बाद देश की राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक परिस्थितियों में जो बदलाव आया, उसने व्यक्ति और समाज दोनों को ही प्रभावित किया। इन सभी परिघटनाओं से इस समय के उपन्यास भी अछूते न रह सके। उपन्यासकार बहुत से प्रश्नों तथा चुनौतियों से एक साथ जूझने लगे। फलतः कथानक चयन से लेकर अभिव्यक्ति शैली तक में नया बदलाव दिखाई देता है। इस कारण इस अवधि के उपन्यासों द्वारा सत्ता के विभिन्न रूपों को समझना व उनका विश्लेषण करना प्रासंगिक होगा। सत्ता जीवन के प्रत्येक पक्ष को प्रभावित करती है और उपन्यास जीवन को सम्पूर्णता में अभिव्यक्त करते हैं। अतः मैंने शोध प्रबंध हेतु इस अवधि के उपन्यासों को चुना तथा सत्ता के विभिन्न रूपों-राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक को विस्तार से समझने एवं विश्लेषित करने का प्रयास किया है।

समाज के विकास के लिए यह परम आवश्यक है कि उसका नियन्त्रण करने वाली शक्ति सम्पन्न व्यवस्था हो। इसलिए सत्ता की अवधारणा पर चर्चा करना आवश्यक हो जाता है। हम सत्ता को परिवार से लेकर सभी संस्थाओं और राज्य में देख सकते हैं। सामाजिक जीवन के प्रत्येक पहलू में सत्ता देखी जा सकती है। सत्ता समाज, संस्कृति, साहित्य, राजनीति, धर्म आदि को प्रभावित करती है और इनसे प्रभावित भी होती है। सत्ता के विमर्श ने अपने आप में जीवन के लगभग हर क्षेत्र को समाहित कर लिया है। आधुनिक समय में अपने समय को समझने की कुंजी है– सत्ता-विमर्श। सत्ताधारी वर्ग, पितृसत्ता, जातिसत्ता, तथा भूमंडलीकरण के रूप में छद्म आधुनिकता दिखाता पश्चिमी गुलामी का नया रूप सब कुछ इस अवधि के उपन्यासों में रेखांकित किया गया है। इस पुस्तक में सत्ता के इन रूपों का विवेच्य कालखंड के उपन्यासों के संदर्भ में विश्लेषण करने का प्रयास किया गया है।

'सत्ता का स्वरूप और संरचना' अध्याय में सर्वप्रथम सत्ता का अर्थ बताने के साथ सत्ता का संस्कृति, राजनीति, समाज और साहित्य से अन्तः संबंध बताया गया है। कार्ल मार्क्स, फ्रेडरिक एंगेल्स, मिशेल फूको, अंतोनियो ग्राम्शी, मैक्स बेबर, एडवर्ड सईद, डॉ. भीमराव अम्बेडकर, डॉ. राममनोहर लोहिया, रजनी कोठारी, किशन पटनायक, धीरू भाई शेठ जैसे विचारकों के हवाले से सत्ता का चरित्र बताया गया है। भारतीय संरचना में विशिष्टवर्ग की सत्ता, पितृसत्ता तथा जातिसत्ता का वर्णन किया गया है तथा भूमंडलीकरण के रूप में सत्ता-विमर्श के बदलते स्वरूप पर विचार किया गया है।

'वर्ग केंद्रित सत्ता-विमर्श के उपन्यास' शीर्षक के अंतर्गत उपन्यास की परिभाषा, महत्त्व व संक्षिप्त इतिहास बताने के साथ शोषक व शोषित वर्ग के सत्ता संबंधों को देखने का प्रयास किया गया है। 1975 के आपात्काल के पश्चात् देश में मूल्यहीन, भ्रष्टाचार पोषित राजनीति का दौर शुरु हुआ। राजनीतिक सत्ता का हस्तक्षेप प्रत्येक क्षेत्र में बढ़ गया। राजनीतिक सत्ता के गठजोड़ से बने प्रभुवर्ग-राजनेता, पूँजीपति, जमींदार, पुलिस, अफसर ने कमजोर वर्ग-किसान, मजदूर, निर्धन जनता का अंधाधुंध शोषण करना प्रारम्भ कर दिया। अतः सत्ताधारी वर्ग द्वारा शक्ति का अनुचित प्रयोग स्वयं उसके अस्तित्व के लिए भी खतरनाक होता है। सत्ता सम्पन्न वर्ग को मानवीय होने की आवश्यकता है यह स्वयं उसके अस्तित्व के लिए भी आवश्यक है।

'स्त्री अस्मिता केंद्रित सत्ता-विमर्श के उपन्यास' हैं। इस अध्याय में शहरी-ग्रामीण, शिक्षित-अशिक्षित, विभिन्न आय वर्ग तथा उच्च-निम्न जाति के स्त्री पात्रों को अर्थात सभी वर्गों की स्त्रियों के जीवन को पितृसत्तात्मक व्यवस्था के आलोक में देखने का प्रयास किया गया है।

परिवार शक्ति-विमर्श की पहली पाठशाला है। इसी पाठशाला में स्त्री को भेदभाव का पाठ पढ़ाया जाता है। हर वर्ग की स्त्री यौन-उत्पीड़न की शिकार है। इन उपन्यासों में प्रत्येक वर्ग की स्त्री बलात्कार की शिकार होती दिखाई गई है। युद्धों, दंगों में स्त्री देह निशाना बनाई जाती है। भूमंडलीकरण के इस दौर में स्त्री को बाजार के 'उत्पाद' के रूप में देखा जा रहा है। दहेज की समस्या, बेमेल विवाह, स्त्रियों को संपत्ति समझने की सामंती मानसिकता, पुरुष का एकाधिकार व अहम्, स्त्री को अपने जीवन के निर्णय लेने पर दंडित करना आदि इन उपन्यासों में विस्तार से दिखाया गया है। अपने अस्तित्व के प्रति सजग होते, अस्मिताबोध से युक्त, पितृसत्ता के अत्याचार का विरोध कर चुनौती देते, एक नई व्यवस्था गढ़ते सशक्त स्त्री पात्र भी इन उपन्यासों में रेखांकित किए गए हैं। स्त्री अस्मिता केंद्रित उपन्यासों को इस अवधि की उपलब्धि कहा जा सकता है।

'वर्ण/जाति केंद्रित सत्ता-विमर्श के उपन्यासों' दलित व गैर दलित उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में जातिव्यवस्था की कटु आलोचना की है। गैर दलित उपन्यासकारों ने 'अपने-अपने राम', 'महाभोज', 'आवां', 'चाक', 'परिशिष्ट', 'कितने पाकिस्तान' आदि उपन्यासों में संवेदना के साथ दलितों की स्थिति, संघर्ष व चेतना का अंकन किया है। वे एक मानवीय समाज की स्थापना करना चाहते हैं परंतु तोड़-फोड़ कर नहीं उसी को परिवर्तित करके। दलित उपन्यासकारों ने 'छप्पर', 'मुक्तिपर्व' तथा 'दोहरा अभिशाप' उपन्यासों में डॉ. भीमराव अम्बेडकर की विचारधारा से प्रभावित होकर वर्णव्यवस्था की अमानवीयता के कारण जातिविहीन समाज के निर्माण तथा दलित अस्मिता की तलाश को मुख्यत: उभारा है। ये उपन्यासकार जाति की सत्ता पर प्रश्नचिह्न लगाते उसे समूल नष्ट करना चाहते हैं।

'हिन्दी उपन्यासों में सत्ता-विमर्श का बदलता स्वरूप' अध्याय में भूमंडलीकरण और उसकी अनिवार्य परिणति उपभोक्तावादी संस्कृति तथा बाजारवाद के प्रभावों को उपन्यासों के संदर्भ में देखने का प्रयास किया गया है। 'कलि-कथा : वाया बाइपास', 'कितने पाकिस्तान', 'मय्यादास की माड़ी', 'आवां', 'एक जमीन अपनी' आदि उपन्यासों में भूमंडलीकरण के फलस्वरूप हमारी सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक, राजनीतिक स्थिति में जो बदलाव दृष्टिगोचर हो रहा है। उसे पूरी शिद्दत के साथ उभारा गया है।

अपने बहुमूल्य सुझाव देने के लिए मैं श्रद्धेय गुरुवर डॉ. हरीश खन्ना प्रो. प्रेमसिंह जी का हृदय से धन्यवाद करती हूँ। मैं गुरुवर की हृदय से आभारी रहूँगी। मैं उन समस्त उपन्यासकारों व ग्रंथकारों के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ जिनकी कृतियों के उपयोग से इस शोध-प्रबंध का कलेवर निर्मित हुआ।

परिवार के सहयोग के बिना तो यह शोधकार्य पूर्ण होना संभव ही नहीं था। मैं अपनी माँ श्रीमति किरणबाला जी के स्नेहाशीर्वाद व निरंतर प्रोत्साहन के लिए उनका आभार प्रकट करती हूँ। मेरे जीवनसाथी सुनील कुमार जी नें इस पुस्तक लेखन के दौरान सदैव मेरा मनोबल ऊँचा बनाए रखा। उनके मूल्यवान सुझावों, प्रेरणा तथा सहयोग के लिए मैं हृदय से नतमस्तक हूँ। यह कठिन कार्य उनके सहयोग के बिना असम्भव था। परिवार के अन्य सदस्य जिनका भरपूर सहयोग-सानिध्य प्राप्त हुआ, के प्रति आभारी हूँ।

–डॉ. रीता

अनुक्रम

भूमिका 5

1. सत्ता का स्वरूप और संरचना 11

(क)सत्ता का अर्थ

(ख)सत्ता-संस्कृति और राजनीति का संबंध

(ग)सत्ता-साहित्य और समाज का अन्तःसंबंध

(घ)सत्ता-वर्ग, स्त्री और जाति का संबंध

(1)सत्ता और वर्ग

(2)पितृसत्ता और स्त्री

(3)सत्ता और जातिव्यवस्था

(ङ)भूमंडलीकरण-सत्ता विमर्श का बदलता स्वरूप

2. वर्ग केंद्रित सत्ता-विमर्श के उपन्यास 56

(क) उपन्यास की परिभाषा, महत्त्व एवं संक्षिप्त इतिहास

(ख) शोषक वर्ग/वर्चस्वशाली वर्ग और सत्ता

(ग) शोषित वर्ग/अधीनस्थ वर्ग और सत्ता

3. स्त्री अस्मिता केंद्रित सत्ता-विमर्श के उपन्यास 104

(क) शहरी स्त्री पात्र एवं पितृसत्ता

(ख) ग्रामीण स्त्री पात्र एवं पितृसत्ता

(ग) विभिन्न आय-वर्ग के स्त्री पात्र एवं पितृसत्ता

(घ) उच्च जाति तथा निम्न जाति के स्त्री पात्र एवं पितृसत्ता

4. वर्ण/जाति केंद्रित सत्ता-विमर्श के उपन्यास 163

(क) गैर दलित उपन्यासकारों के उपन्यासों में जातिगत व्यवस्था और सत्ता

(ख) दलित उपन्यासकारों के उपन्यासों में जातिगत व्यवस्था और सत्ता

5. उपन्यासों में सत्ता-विमर्श का बदलता स्वरूप 211

(क) भूमंडलीकरण और उपन्यास

(ख) उपभोक्तावादी संस्कृति और उपन्यास

(ग) बाजारवाद और उपन्यास

6. उपसंहार 252

आधार ग्रंथ सूची 264

संदर्भ : ग्रंथ-सूची 266